2 असली चित्र

राजा कृष्णदेव राय के राज्य में एक महाकंजूस सेठ रहता था। उसके पास अपार धन था। लेकिन एक कौड़ी खर्च करने में उसकी जान निकलती थी। एक बार उसके मित्रों ने उसे एक कलाकार से अपना चित्र बनवाने को राजी कर लिया। मानने को वह मान तो गया पर चित्रकार चित्र बनाकर जब उसके पास ले आया, तब उसका मूल्य सौ स्वर्ण मुद्राएँ देने की उसकी हिम्मत ही नहीं हो रही थी। वह कंजूस सेठ भी एक तरह का कलाकार ही था। वह अपने चेहरे की आकृति बदलने में माहिर था। वह चित्रकार को आया देख तुरन्त कमरे में गया और कुछ ही देर में अपना चेहरा बदलकर वहाँ आ गया।

चित्रकार के सामने आकर सेठ ने कहा, ''तुम्हारा चित्र तो मेरे चेहरे से मिलता ही नहीं। फिर यह मेरे किस काम का ? तुम्हीं मिलाकर देख लो। चित्रकार, मेरे चेहरे को ठीक से देख लो। अब जब ठीक मेरे चेहरे से मिलता हुआ चित्र बनाकर लाओगे, तभी उसकी कीमत अदा करूँगा।

चित्रकार निराश हो चला गया। दूसरे दिन चित्रकार एक नया चित्र बनाकर लाया जो उसके पिछले दिन के चेहरे से एकदम मिलता था। लेकिन कमाल! सेठ ने इस बार भी अपना चेहरा बदल लिया। चित्रकार ने चित्र मिलाकर देखा तो और भी भौंचक रह गया। चेहरा चित्र से न मिलता था सो न मिला। चित्रकार मारे शर्म के पानी-पानी हो गया। उसकी समझ में यह बात नहीं आ रही थी कि आखिर उससे ऐसी गलती हो कैसे जाती है। उसने फिर से चित्र बनाने का फैसला किया।

अगले दिन वह फिर एक नया चित्र बनाकर ले आया। लेकिन सेठ की कारस्तानी से उस चित्र के साथ पूर्व के दिनों के जैसा ही हश्र हुआ। इसके बाद भी कई दिनों तक नये-नये चित्र बनाता रहा और हर बार उसे निराशा हाथ लगती रही।

लेकिन कई दिनों के अनुभव से वह सेठ की चाल को समझ चुका था। वह सेठ की कंजूसी को भी जान गया था और पैसे न देने के बाद भी वह कई दिनों की अपनी मेहनत को बेकार नहीं जाने देना चाहता था। कैसे कंजूस सेठ से पार पाया जाए, इस पर खूब सोचने के

© BSTBPC WEB COPY, NOT TO BE PUBLISHED

बाद उसने तेनालीराम से मिलने का फैसला किया। उनके पास चित्रकार ने अपनी समस्या रखी और कोई समाधान निकालने की प्रार्थना की।

थोड़ी देर सोचने के बाद तेनालीराम ने चित्रकार को सलाह दी, ''कल तुम कंजूस के पास एक आईना लेकर जाओ और कहो कि आज आपका बिलकुल सही चित्र लेकर आया हूँ। खूब ठीक से मिलाकर देख लें। रत्तीभर भी फर्क आपको नहीं मिलेगा। बस, इतना भर करो और तुम्हारा काम चाँदी।'' कल होकर चित्रकार तेनालीराम के कहे अनुसार आईना लेकर कंजूस सेठ के पास पहुँचा। सेठ के सामने आईना रखकर उसने कहा, ''सेठजी आज आपका बिलकुल सही चित्र बनाकर लाया हूँ, देख लें, इसमें किसी प्रकार की त्रुटि की गुंजाइश अब नहीं है। इस पर सेठ बहुत झुंझलाया और बौखलाकर बोला, ''अरे, यह चित्र कहाँ है ? यह तो आईना है।'' चित्रकार ने तब सेठ को जवाब दिया, ''सेठजी महाराज, आईना के सिवा आपकी असली सूरत और कौन बना सकता है? बस जल्दी से मेरे चित्रों की कीमत एक हजार स्वर्ण मुद्राएँ निकालें।'' अब सेठ, समझ गया था कि यह बुद्धि और सूझ-बूझ तेनालीराम की ही हो सकती है। उसने बिना देर किए एक हजार स्वर्ण मुद्राएँ निकालकर चित्रकार के हवाले कर दी।

अगले दिन तेनालीराम ने इस घटना की खबर राजा कृष्णदेव राय को दी तो वह हँसते-हँसते लोट-पोट हो गए।

शब्दार्थ :

अपार	–	बहुत, अधिक	**राजी**	–	मानना
स्वर्ण	–	सोना (धातु)	**अदा करना**	–	चुकाना
भौंचक	–	आश्चर्य	**कारस्तानी**	–	करतूत, कर्म
हश्र	–	परिणाम			

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से –

1. यह कहानी आपको कैसी लगी? इस संदर्भ में आप अपने विचार लिखिए।
2. इस कहानी का कौन-सा पात्र अच्छा लगा और क्यों?
3. चित्रकार ने तेनालीराम से मिलने का फैसला क्यों लिया?
4. "एक कौड़ी खर्च करने में उसकी जान निकलती थी।" इस वाक्य का आशय स्पष्ट कीजिए।
5. **रिक्त स्थानों को भरिए।**

   (क) कंजूस सेठ ने चित्रकार से .... देने का वादा किया।

   (ख) यह कहानी राजा .... के राज्य की है।

   (ग) चित्रकार ने ....से सलाह ली।

   (घ) एक दिन चित्रकार .... लेकर सेठ के पास पहुँचा।

   (ङ) तेनालीराम राजा कृष्णदेव राय के दरबार में .... थे।
6. **आपके अनुसार चित्रकार ने सेठ को चित्र की जगह आईना क्यों दिखाया।**

   (क) वह सेठ को मूर्ख समझता था।

   (ख) वह सेठ का सही चित्र नहीं बना सकता था।

   (ग) वह सेठ के 'साथ जैसे को तैसा' कहावत चरितार्थ कर रहा था।

   (घ) वह अपना पारिश्रमिक पाना चाहता था।

© BSTBPC WEB COPY NOT TO BE PUBLISHED

पाठ से आगे-

1. चित्रकार की जगह आप होते तो क्या करते?
2. गप्प लगाने से नुकसान ज्यादा होता है या फायदा? पाँच वाक्यों में लिखिए।
3. बार-बार कंजूस सेठ द्वारा अपना चेहरा बदल लेने के बाद चित्रकार को सलाह किसने दी? दी गई सलाह का क्या परिणाम हुआ?
4. क्या इस कहानी का कोई और शीर्षक हो सकता है, यदि हाँ तो क्या?

व्याकरण

1. बॉक्स में दिए गए शब्दों को संज्ञा के विभिन्न भेदों में छाँटकर लिखिए।

कृष्णदेव राय, चित्रकार, तेनालीराम, पानी, आईना, लोग, कंजूसी, दूध, ईमानदारी, गाय, वर्ग, चीनी, गाय, हिमालय, मेला

जातिवाचक संज्ञा-

व्यक्तिवाचक संज्ञा-

भाववाचक संज्ञा-

द्रव्यवाचक संज्ञा-

समूहवाचक संज्ञा-

2. इन मुहावरों को वाक्य में प्रयोग कीजिए-

पानी-पानी होना,

काम चाँदी होना,

हँसते-हँसते लोट-पोट होना,

हिम्मत हारना

भौंचक रह जाना

3. इनके विपरीतार्थक शब्द लिखिए-

नया	निराशा	समझ
देर	सही	

© BSTBPC NOT TO BE PUBLISHED

4. निम्न शब्दों से वाक्य बनाइए-

चित्रकार

पत्रकार

कलाकार

सलाहकार

नाटककार

कुछ करने को-

1. तेनालीराम की ही तरह बीरबल और गोनू झा के किस्से भी प्रचलित हैं। अपनी कक्षा में वैसे किस्से सुनाइए।
2. इस कहानी को एकांकी के रूप में कक्षा में प्रस्तुत कीजिए।

© BSTBPC WEB COPY NOT TO BE PUBLISHED